हिमालय की बेटियाँ पाठ -3

नागार्जुन

पाठ का सारांश

इस निबंध के लेखक ने उन नदियों का वर्णन किया है जो हिमालय से निकलकर सागर तक पहुँचने के मध्य कई रूप धारण कर लेती है। लेखक ने अभी तक इन नदियों को दूर से ही देखा था। मैदानी इलाकों में यह नदियाँ बड़ी गंभीर, शांत तथा अपने आप में खोई हुई-सी प्रतीत होती थीं। किसी सभ्य महिला की तरह दिखने वाली इन नदियों के प्रति लेखक के मन में आदर तथा श्रद्धा के भाव थे। वह इन नदियों की धारा में वैसे ही डुबकी लगाया करता था जैसे कोई बच्चा अपनी माँ, दादी, मौसी या मामी की गोद में खेला करता है। मैदानी भागों में नदियाँ माता स्वरूपिणी बन मानव जाति के पालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसलिए उनके लिए मन में आदर का भाव सहज ही उत्पन्न हो जाता है।

लेकिन इस बार जब लेखक हिमालय की यात्रा पर गया तो इन नदियों का एक ही रूप देख हैरान रह गया। हिमालय पर दुबली-पतली सी दिखने वाली गंगा,यमुना तथा सतलुज मैदानों में उतर कर इतनी विशाल कैसे हो जाती है। इनके व्यवहार चंचलता तथा उल्लास मैंदानों में क्यों नहीं दिखाई देता ? हिमालय की गोद में अठखेलियाँ करती उसकी इन बेटियों की बाल-लीला देखकर लेखक को जितना आश्चर्य हुआ उतना कभी किसी छोटी लड़की या नन्हीं कली को देखकर भी नहीं हुआ था।

लेखक सोच में पड़ जाता है कि अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी यह नदियाँ अतृप्त क्यों हैं तथा किस लक्ष्य के लिए बेचैन होकर भागी जा रही हैं ? वह कौन-सी मंजिल है जहाँ पहुँचकर इनकी प्यास बुझ सकेगी ? बर्फहीन पहाड़ियाँ, हरी-भरी घाटियाँ और गहरी गुफाएँ, जहाँ इनकी बाल क्रीड़ा होती है, को छोड़कर ये आगे बढ़ जाती हैं। आगे जाकर जब ये मैदानी जंगलों में पहुँचती है तो क्या इन्हें बीते दिन याद नहीं आते ? बूढ़ा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए जरूर परेशान रहता होगा, लेकिन यदि हम उसकी बड़ी-बड़ी चोटियों से यह पूछें तो सिवाय मौन के और कोई उत्तर नहीं मिलेगा।

सिंधु और ब्रह्मपुत्र के बीच रावी, सतलज, चिनाब, झेलम, गंडक, गंगा,यमुना आदि कई छोटी बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं जो हिमालय की ही बेटियाँ हैं। वास्तव में यह नदियाँ हिमालय के पिघले हुए हृदय की बूँदें हैं जो इकट्ठा होकर समुद्र के ओर प्रवाहित होती रहती हैं। वह समुद्र सचमुच बड़ा सौभाग्यशाली है, जिसे पर्वतराज हिमालय की इन बेटियों का हाथ थामने का श्रेय मिला।

मैंदानों में इन नदियों को देखकर शायद ही यह कोई अनुमान लगा पाये कि वृद्ध हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं। लेखक कहता है अपने पिता की गोद में नंग-धड़ंग खेलने वाली इन बालिकाओं का रूप पहाड़ी लोगों के लिए सामान्य बात हो सकती है, लेकिन उसे यह रूप इतना लुभावना लगता है कि वह हिमालय को श्वसुर और तथा समुद्र को उसका दामाद कहने में ज़रा भी संकोच नहीं करता।

कालिदास ने अपने 'मेघदूत' में वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेयसी के रूप में चित्रित किया है। लेखक कहता है कि पहाड़ों तथा मैदानों मे नदियों के अलग-अलग रूप देखकर कोई भी इसी नतीजे पर पहुँचेगा। काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है, परंतु लेखक माता मानने से पहले इन नदियों को बेटियाँ तथा उसके बाद प्रेयसी का रूप भी देते हैं। इतना ही नहीं ममता का एक और धागा वह इन नदियों के साथ जोड़ रहा है। वह इन्हें बहन भी बना लेता है, क्योंकि थो-लिङ् (तिब्बत) में परेशानी के क्षणों में जब वह सतलज के किनारे जाकर बैठा तो शीघ्र ही उसका मन तरोताजा हो गया। ठीक वैसे ही जैसे कोई बहन अपने भाई की मुश्किलें चुटकी बजाते ही सुलझा देती है। वहीं बैठा-बैठा लेखक अपनी सतलज बहन पर एक कविता लिख देता है।